दिनांक :- 20-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ॰ फ़ारूक़ आज़म (अतिथी शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड (कला, अनुशांगिक)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- चतुर्थ

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- सिंधुघाटी की सभ्यता।

सभ्यता का स्वरूप (Nature of civilization)

सिंधु सभ्यता प्रस्तर-धातु युगीन सभ्यता थी। क्योंकि उत्खनन में दोनो के अवशेष मिले है। सिंधु घाटी के निवासी धातुओं का प्रयोग आरम्भ कर चुके थे। फिर भी पत्थर का व्यवहार औजार और घरेलु साम... के रूप में होता था। खुदाई में साम्राज्य, युद्ध और

सैन्य संगठन सम्बंधी कोई वस्तु नहीं मिली है। अस्त्र शस्त्र का सर्वथा अभाव है। यहाँ तक कि राजाओं के नाम भी नहीं मिलते हैं। इससे यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि यह सभ्यता शांतिमूलक थी। फिर भी यह नहीं कहा जा सकता है कि सिंधु सभ्यता के निवासी सुरक्षा-व्यवस्था के प्रति पूर्णतः उदासीन थे। सुरक्षा के लिए दुर्गों की घेराबन्दी की जाती थी तथा उनपर रक्षकों के लिए बुर्जियाँ बनायी जाती थी। ताम्र कांस्य निर्मित भाले, छुरा छोटी तलवार, कुल्हाड़ी तथा बाणाग्रों का उपयोग सुरक्षात्मक साधनों के रूप में होता होगा। सिंधु सभ्यता व्यापार-प्रधान और शहरी थी। बड़े-बड़े नगरों की स्थापना की गयी थी, जो उद्योग-धंधों और व्यापार के केन्द्र थे। नगर प्रशासनिक केन्द्र भी थे। लोग नागरिक जीवन व्यतीत करते थे और प्रत्येक वस्तु को उपयोगिता की दृष्टि से देखते थे। सिंधु घाटी के निवासियों ने नगर-निर्माण

एवं भवन-निर्माण की ओर विशेष ध्यान दिया था। भवन निर्माण में रुचि और उपयोगिता का विशेष ख्याल रखा जाता था, विदेशों से व्यापारिक सम्बंध स्थापित किया गया था। विशाल भवन और स्नागार उस समय के लोगों के सामूहिक जीवन के द्योतक है। अतएव कुछ लोगों का मत है कि यह सभ्यता लोकतंत्रात्मक थी, क्योंकि राजाओं के अस्तित्व का पता नहीं चलता। परंतु वहाँ के निवासियों की शांतिमूलकता तथा अपरिवर्तनवादी स्वभाव से इस बात का संकेत मिलता है कि धर्म का प्रभाव राजनीति पर भी था।

सिंधु-सभ्यता की मौलिक विशेषताएँ
(Features of the Indus Valley civilization)

(i) कांस्य-सभ्यता: सिंधु घाटी की सभ्यता को ताम्रयुगीन सभ्यता कहते है क्योंकि तांबे के हथियारों एवं अन्य वस्तुओं की बहुतात थी। पत्थर के भी अस्त्र शस्त्र बनाए जाते थे

बाद में वृहत पैमाने पर काँसे के हथियारों एवं अन्य वस्तुओं का बहुतात निर्माण होने लगा। काँसे की प्रधानता रहने के कारण ही इस सभ्यता को काँस्य कालीन सभ्यता कहते हैं।

(ii) नागरिक सभ्यता :- यह सभ्यता नागरिक भी थी, क्योंकि विशाल नगर, सुव्यवस्थित राजमार्ग, पक्के भवनों सुव्यवस्थित नालियाँ, सड़के एवं सार्वजनिक स्नानागार का निर्माण सुदृढ़ शासन व्यवस्था - से प्रमाणित करते हैं कि साधारण नागरिकों की सुख-सुविधा पर भी ध्यान दिया जाता था। सम्भवतः समकालीन अन्य सभ्यताओं में नागरिकों की सुखसुविधा पर इतना अधिक ध्यान कहीं नहीं दिया गया था।

(iii) जनतांत्रिक सभ्यता :- उत्खनन से प्राप्त समागवन और स्नानागार सिंधुवासियों के सामूहिक जीवन के प्रतीक हैं। सिंधु-प्रदेश में राजा, राजप्रासाद और शाही रखवालों का कोई प्रमाण नहीं मिला है। शासन के प्रधान केन्द्र थे।

हड़प्पा और मोहनजोदड़ो। उत्तरी भाग का शासन हड़प्पा और दक्षिणी भाग का शासन मोहनजोदड़ो से संचालित होता था। इस प्रकार लोकतांत्रिक होते हुए भी शासन व्यवस्था नियंत्रित थी। केन्द्रीय शक्ति का विकेन्द्रीकरण कर दिया गया था। केन्द्रीय शासन के पदाधिकारी नगरों में स्थानीय अधिकारियों और नागरिकों के सहयोग से शासन करते थे। स्वायत्तशासन की प्रथा प्रचलित थी।

(iv) औद्योगिक सभ्यता :- सिंधु सभ्यता के निवासियों के आर्थिक जीवन का आधार व्यापार और उद्योग-धन्धा था। उनका व्यापार दूर-दूर देशों से होता था। अनेक प्रकार के उद्योग-धंधों का भी विकास हुआ था। उनके उद्योग-धंधों वाणिज्य-व्यवसाय तथा विदेशी सम्पर्क उनकी उन्नत आर्थिक अवस्था को प्रमाणित करते हैं। आर्थिक जीवन औद्योगिक विशेषीकरण और स्थानीयकरण

पर आधारित था। ऐसा प्रतीत होता है कि सिंधु-सभ्यता में श्रम-विभाजन और संगठन की भी व्यवस्था थी। एक व्यक्ति एक ही व्यवसाय करता था और एक प्रकार के व्यवसाय करनेवाले लोग एक ही क्षेत्र में निवास करते थे। बड़े-बड़े नगरों की स्थापना की गयी थी और विदेशों से व्यापार-सम्बंध स्थापित किया गया था।

(7) शान्तिमूलक सभ्यता :- सिंधु सभ्यता के निवासी शान्तिप्रिय थे। कवच, ढाल, शिरस्त्राण आदि युद्ध में प्रयुक्त होनेवाले उपकरणों का अभाव है। उत्खनन से प्राप्त भाला, कुल्हाड़ी, धनुष-बाण उनकी सामरिक प्रवृत्ति के द्योतक नहीं है। इन उपकरणों का प्रयोग आखेट तथा आत्मरक्षा के लिए किया जाता था। तलवारें भी मिली हैं लेकिन उनकी बनावट ऐसी है कि उनका उपयोग युद्ध के लिए नहीं हो सकता था। तलवार की धार भोथरी है। इस प्रकार यह सभ्यता शान्तिमूलक सभ्यता थी।

(vi) सुव्यवस्थित धार्मिक जीवन — सिंधु घाटी के निवासियों का धार्मिक जीवन सुव्यवस्थित था। उनका धर्म मूलतः द्विदेवतामूलक था। वे मुख्य रूप से दो देवताओं की उपासना करते थे — एक पुरुष के रूप में और दूसरी नारी के रूप में। वे पुरुष और नारी को ईश्वर की सृजनात्मक शक्ति का प्रतीक मानते थे। उनके धार्मिक विश्वास, धारणाएँ एवं विधियाँ निश्चित तथा सुसंगठित थीं।

(vii) लेखन-कला, गणना तथा माप-तौल का ज्ञान :- सिंधु घाटी के निवासी लेखन-कला, अंकों की गणना एवं माप तौल के साधनों से परिचित थे। सिंधु लिपि चित्रलिपि थी और दायें से बायें लिखी जाती थी।

(viii) समष्टिवादिनी सभ्यता :- सिंधु सभ्यता समष्टिवादिनी थी। इसमें राजभवनों, राजाधिकारियों और राज-सम्पत्ति का बाहुल्य नहीं था, बल्कि इसमें विशाल समाभवन हैं।